International Journal of Education and Science Research Review
Volume-2, Issue-4 August- 2015
E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2348-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

डॉ राजेन्द्र प्रसाद झाझडिया
H.O.D. Faculty of Education
JJT University,Chudela, Jhunjhunu(Rajasthan)

1 प्रस्तावना

शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया के द्वारा बालक का विकास करता है। शिक्षक आयु की विभिन्न अवस्थाओं में बालक के विकास को समझकर उसके अनुरूप ही अधिगम अनुभव प्रदान करता है। आयु की विभिन्न अवस्थाओं में बालक का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास अलग–अलग होता है।

शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया के द्वारा बालक का विकास करता है। शिक्षक आयु की विभिन्न अवस्थाओं में बालक के विकास को समझकर उसके अनुरूप ही अधिगम अनुभव प्रदान करता है। आयु की विभिन्न अवस्थाओं में बालक का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास अलग–अलग होता है।

संवेग में व्यक्ति किसी मनोवैज्ञानिक या संवेगात्मक परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण कर उत्तेजित हो उठता है और उस उत्तेजित अवस्था का चेतन अनुभव करते ही उसमें आन्तरिक एवं बाह्य शारीरिक परिवर्तन होने लगते हो और संवेगात्मक व्यवहार करने लगता है।

किशोरावस्था में संवेगाात्मक विकास

कोल एवं ब्रूस का विचार है – "किशोरावस्था के आगमन का मुख्य चिन्ह् संवेगाातमक विकास में तीव्र परिवर्तन है।" किशोर में प्रेम, दया, क्रोध, सहानुभूति आदि संवेग स्थायी रूप धारण कर लेते है। वह इन पर नियंत्रण नहीं रख पाता। किशोर में विभिन्न संवेगों के रूप इस प्रकार पाये जाते है –

- **क्रोध–** किशोरों में क्रोध पैदा करने वाली परिस्थितियाँ सामाजिक होती है। नव किशोर में क्रोध संवेग की उत्पत्ति उपहास करने, आलोचना करने, अपमानजनक व्यवहार करने, प्रतिबंध लगाने तथा अनुचित दण्ड देने के कारण होती है। किशोर क्रोध की अभिव्यक्ति गाली देकर, निन्दा कर, मजाक उड़ाकर करता है।
- **भय–** किशोर यह दावा करते है कि उन्हीं किसी चीज से भय नहीं लगता किन्तु वास्तविकता में नई, अपरिचित सामाजिक परिस्थितियों से डरते है। भय की प्रतिक्रिया स्वरूप शरीर का जड और पीला हो जाना, पसीना आना, बैचेन होना आदि क्रियायें होती है।
- **ईर्ष्या–** किशोरावस्था की ईर्ष्या का स्वरूप स्वयं को असुरक्षित अनुभव करने के कारण होता है। उस ईर्ष्या की प्रतिक्रिया स्वरूप वे शाब्दिक आक्रमण, व्यंग्यात्मक टीका–टिप्पणी, हँसी उड़ाना अथवा निन्दा आदि कार्य करते है।
- **प्रेम व स्नेह–** किशोरावस्था का स्नेह एक आत्मसात करने वाला संवेग हो किशोरावस्था का संवेग एक सुखद सम्बंध होता है। जिन्हें किशोर चाहता है उनके प्रति उसका प्रेम, स्नेह अति प्रगाढ़ होता है।
- **जिज्ञासा**– जब किशोर के जीवन में नयी चीजें आती है तो वे उसकी जिज्ञासा को उद्दीप्त करती है। स्त्री–पुरूष का संबंध, विषमलिंगी का अनुभव, स्कूल के नए–नए विषय आदि उसकी जिज्ञासा को बढ़ाते है इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप किशोर सवाल पूछना, टीका–टिप्पणी आदि करता है।

  किशोरावस्था में उपर्युक्त लिखित संवेगों में तीव्रता पाई जाती है और उनका संवेगात्मक विकास अनेक कारकों से प्रभावित होता है।

संवेगात्मक परिपक्वता

संवेगात्मक परिपक्वता का प्रभाव मानव के सम्पूर्ण जीवन पर उसके व्यवहार को एक सही दिशा एवं व्यवस्था देने के रूप में पड़ता है। सांवेगिक रूप से परिपक्व व्यक्ति अपने आत्मविश्वास, सुरक्षा की भावना व आत्मसम्मान द्वारा न केवल अपने संवेगों पर नियंत्रण करने में सक्षम होता है, अपितु इस प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न होने पर किन्हीं दूसरे व्यक्तियों को निर्देशित करने के लिए पूर्णरूप से योग्य होता है।

संक्षिप्त रूप में उस व्यक्ति को संवेगात्मक रूप से परिपक्व कहा जा सकता है जो अपने संवेगों पर उचित अंकुश रखते हुए उन्हीं भली–भाँति अभिव्यक्त कर सके।

व्यक्ति अपने विकास में ऐसी परिस्थितियों का सामना करता है, जो उसकी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति एवं लक्ष्य प्राप्ति में बाधक होती है। ऐसी स्थिति में यदि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तो वह अपनी परिस्थिति या वातावरण से समायोजन कर लेता है पर यदि उसे सफलता नहीं मिलती है तो उसमें असमायोजन उत्पन्न हो जाता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है। कुसमायोजित व्यक्ति अपने को परिवेश के अनुकूल बनाने में असमर्थ होता है। वह अनिश्चित मन वाला, अस्थिर बुद्धि वाला, संवेगात्मक रूप से असंतुलित, अनिर्दिष्ट उद्देश्य वाला, घृणा–द्वेष एवं बदले की भावना रखने वाला होता है। कुसमायोजन के मानसिक कारण निम्नलिखित है –

- **भग्नाशा–** भग्नाशा या कुण्ठा का अर्थ है – किसी इच्छा या आवश्यकता में अवरोधक आ जाने से उत्पन्न संवेगात्मक तनाव।
- **मानसिक संघर्ष–** मानसिक संघर्ष को मानसिक द्वन्द्व के नाम से भी पुकारा जाता है। मानसिक संघर्ष पूर्ण रूप से विरोधी भावनाओं के कारण उत्पन्न होता है। मानसिक द्वन्द्व या संघर्ष उस समय उत्पन्न होते है, जब एक व्यक्ति को पर्यावरण की उन शक्तियों का सामना करना पड़ता है, जब उसकी स्वयं की रूचियों और इच्छाओं के विपरीत कार्य करती है।
- **मानसिक तनाव –** मानसिक तनाव शारीरिक एवं मानसिक असामान्यता के कारण उत्पन्न होता है। तनाव, असंतुलन की दशा है जो प्राणी को अपनी उत्तेजित दशा का अंत करने के लिए कोई कार्य करने को प्रेरित करती है।इस प्रकार तनाव व्यक्ति का असामान्य मनोदशा या व्यवहार का परिचायक होता है।

भग्नाशा, मानसिक संघर्ष, मानसिक तनाव आदि तत्व समायोजन की स्थिति में विकृति लाते है। जब बालक अच्छी तरह से समायोजन की कोशिश करना चाहता है तब उक्त तत्व उस समायोजन में बाधा उत्पन्न करते है।

जब व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं, परिस्थितियों से समायोजन कर लेता है, स्वयं को संतुलित बनाए रखता है, उसका व्यक्तित्व समायोजित रहता है, इसके विपरीत जब व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और अपने पर्यावरण के साथ संतुलित नहीं रह पाता तो उसका व्यक्तित्व असमायोजित हो जाता है। समायोजन व्यक्ति के व्यक्तित्व में उन्नति लाता है किन्तु कुसमायोजन उसे अवनति की ओर ले जाता है। बालक अपनी परिस्थितियों एवं वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करें, इसके लिए बालक के उपयुक्त संवेगात्मक विकास के लिए प्रयास किया जाना चाहिए।

2 शोध समस्या की आवश्यकता और महत्त्व

शिक्षा व्यक्तियों में वांछित आदतों, अभिवृत्तियों व कौशलों का निर्माण करने में सहायता करती है ताकि व्यक्ति समाज में स्वस्थ समायोजन स्थापित कर सके और एक प्रभावशाली शिक्षक के लिए आवश्यक होता है कि वह अपने विद्यार्थियों एवं शिक्षण की पाठ्यवस्तु को समझे। विद्यार्थियों को समझने का अर्थ है उनके व्यक्तित्व, बुद्धि, अभिरूचियाँ, अभिवृत्तियाँ, प्रवणता, सर्जनात्मकता तथा समाजिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास क्रम को समझना।

माध्यमिक स्तर पर पड़ने वाले विद्यार्थी किशोरावस्था में होते है जो ना तो छोटे बालक होते है और ना ही प्रौढ़। किशोर विद्यार्थियों में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होते है। इस अवस्था में उन्हीं सही शिक्षा और मार्गदर्शन की आवष्यकता होती है क्योंकि उनकी संवेगात्मक परिपक्वता का उनके समायोजन पर प्रभाव पड़ता है।

3 शोध समस्या का अभिकथन

"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थिया- की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

4 शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित है –

1. किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. किशोर विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
3. किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

5 परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम सांवेगिक दमन के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम सामाजिक कुसमायोजन के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के आयाम सामाजिक के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6 अनुसंधान का प्रारूप

शोधकर्त्री ने अपना शोधकार्य निम्न प्रारूप के आधार पर किया है–

(1) शोध विधि

शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

(2) प्रतिदर्श

शोधकार्य के लिए राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के गोविन्द नगर–अजमेर रोड एवं महापुरा क्षेत्र के कुल 120 विद्यार्थियों (60 छात्रा- + 60 छात्राआ-) का चयन किया गया है।

(3) शोध के चर

स्वतंत्र चर – संवेगात्मक परिपक्वता।

आश्रित चर – व्यक्तित्व एवं समायोजन।

(4) उपकरण –

शोधकत्र्ः ने अपने शोधकार्य में निम्नलिखित तीन प्रमापीकृत उपकरणा- का प्रयोग किया है–

1. डॉ.यशवीर सिंह और डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी।
2. डॉ. श्रीमती ए. पाण्डे द्वारा निर्मित किशोर व्यक्तित्व परीक्षण।
3. डॉ. ए.के. पी. सिन्हा एवं डॉ. आर. पी. सिंह निर्मित समायोजन परीक्षण।

7 शोधकार्य की परिसीमाएँ

1. शोधकर्त्री ने समय, धन के व्यय का ध्यान रखते हुए शोधकार्य पूरा किया।
2. इस अध्ययन के लिए इन्दौर के किशोर विद्यार्थियों को चुना है।
3. इस अध्ययन के लिए माध्यमिक स्तर के 60 किशोर बालक एवं 60 किशोर बालिकाओं को ही न्यादर्श हेतु लिया है।

8 प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकर्त्री ने अपने शोध विषय की परिकल्पनाओं हेतु आवश्यक समंकों का संकलन, वगध्करण, सारणीयन, प्रस्तुतीकरण एवं सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर विश्लेषण एवं विवेचन प्रस्तुत किया है, जो निम्नानुसार

परिकल्पना –1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
छात्र	60	122.62	15.04	3.17	सार्थक
छात्रा	60	126.87	14.57		

गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 3.17 है, जो कि टी–तालिका मूल्य के 0.05 स्तर से अधिक है, अतः निराकरणीय परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राएँ संवेगाात्मक परिपक्वता में अंतर रखते है।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि दोनों समूह के मध्यमान क्रमशः 122.62 एवं 126.87 एवं प्रमाप विचलन 15.04 व 14.57 है। मध्यमानों से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में असमानता है।

परिकल्पना– 2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम सांवेगिक अस्थिरता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
छात्र	60	22.85	5.46	0.12	सार्थक नहीं
छात्रा	60	22.72	6.15		

उपरोक्त तालिका संख्या 2 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम सांवेगिक अस्थिरता को दर्शाती है। स्वतंत्रता के अंश 118 का टी–तालिका का मूल्य 0.05 स्तर पर 1.98 है। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 0.12 है, जो कि टी–तालिका मूल्य के 0.05 स्तर से कम है। इसका तात्पर्य है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राएँ संवेगाात्मक परिपक्वता के आयाम सांवेगिक अस्थिरता में कोई अंतर नहीं रखते है।

परिकल्पना– 3

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम सामाजिक कुसमायोजन के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 4

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
छात्र	60	21.0	5.04	3.18	सार्थक
छात्रा	60	18.2	4.57		

उपरोक्त तालिका संख्या 4 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम सामाजिक कुसमायोजन को दर्शाती है। स्वतंत्रता के अंश 118 का टी की तालिका का मूल्य 0.05 स्तर पर 1.98 है। गणना करने पर टी–मूल्य 3.18 प्राप्त हुआ, जो कि टी की तालिका मूल्य के 0.05 स्तर से अधिक है, अतः निराकरणीय परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम सामाजिक

कुसमायोजन के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है", अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राएँ संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम सामाजिक कुसमायोजन में कोई अंतर नहीं रखते है।

परिकल्पना– 4

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. तालिका 12

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
छात्र	60	10.8	2.66	0.934	सार्थक नहीं
छात्रा	60	9.66	2.89		

उपरोक्त तालिका संख्या 12 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन को दर्शाती है। स्वतंत्रता के अंश 118 का टी की तालिका का मूल्य 0.05 स्तर पर 1.98 है। गणना करने पर प्राप्त टी मूल्य 0.12 है, जो कि टी की तालिका मूल्य के 0.05 स्तर से कम है। इसका तात्पर्य है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना– 5

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं- के समायोजन के आयाम शैक्षिक समायोजन के मध्यमानों- में- कोई सार्थक अन्तर नहं॰ है।

तालिका 15

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
छात्र	60	4.6	2.92	0.55	सार्थक नहीं
छात्रा	60	4.3	2.99		

उपरोक्त तालिका संख्या 15 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के आयाम शैक्षिक समायोजन को दर्शाती है। स्वतंत्रता के अंश 118 का टी की तालिका का मूल्य 0.05 स्तर पर 1.98 है। गणना करने पर प्राप्त टी मूल्य 0.55 है, जो कि टी की तालिका मूल्य के 0.05 स्तर से कम है। इसका तात्पर्य है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्र एवं छात्राएँ समायोजन के आयाम संवेगात्मक समायोजन में कोई अंतर नहीं रखते है।

9 शैक्षिक निहितार्थ –

1. किशोरों को संवेगात्मक विकास हेतु विद्यालय तथा घर पर लोकतन्त्रीय वातावरण उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
2. किशोरों के संवेगात्मक विकास को ध्यान में रखते हुए उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण और प्रेमपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए।
3. किशोरों के व्यक्तित्व की विशेषताओं का सम्मान रखना चाहिए तथा उन्हें किये गये कार्यो के लिये प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान करने चाहिए।
4. विद्यालय में शारीरिक व्यायाम की उचित व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे किशोरों के स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क द्वारा पर्याप्त रूप से संवेगात्मक विकास हो सके।
5. किशोरों के सर्वागीण विकास हेतु विद्यालय में सह–पाठ्यक्रम क्रियाकलापों को पर्याप्त मात्रा में स्थान दिया जाना चाहिए।
6. शिक्षकों को विद्यार्थियों से इस प्रकार व्यवहार करना चाहिए कि विद्याथ्र्ा शिक्षकों को अपनी समस्याएँ बता सके।
7. किशोरावस्था में संघर्ष, प्रेम, भय, द्वेष आदि भावों की प्रचुरता होती है। अतः इन भावों को देशप्रेम, समाज सेवा और अन्याय के विरूद्ध मार्गान्तरीकरण करना चाहिए।
8. किशोरों के लिए यह समय बहुत नाजुक होता हो क्यों कि उन्हें अपनी शैक्षिक व व्यावसायिक योजनाओं हेतु निर्णय लेने होते है। ऐसे में विद्यालयों में शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशन की व्यवस्था होनी चाहिए।

9. किशोरों को विभिन्न क्षेत्रों में जाने माने प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मिलने के अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए ताकि वे उनके अनुभवों को जानकर जीवन को पहचानने व अपने जीवन पर स्व–नियंत्रण प्राप्त कर सके।
10. किशोर विद्यार्थियों की शिक्षा में मानवीयता के विकास के अवसर अवश्य होने चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ साहित्य

1. Andrew Sayer "Method in Social Science: A Realist Approach" II Edition, London, New York, 1997
2. Best, John W. & James V. Kahn "Research in Education" V Edition, New Delhi Prentice Hall of India Private Ltd. 1986
3. Good, Carter V. & Dougles B. S. "Methods of Research: Education Psychological & Sociological" New York (USA), Appleton Century.
4. Kerlinger, Fred N. "Foundations of Behavioral Research" II Edition, Delhi Surjeet Publications, 1983
5. Skineer, Charls E. "Educational Psychology" III Edition, New Delhi Prentice Hall of India Limited, 1977
6. Tuckman, Bruce W. "Conducting Educational Research" New York (USA) Harcourt Bruce Jovanovich inc., 1972
7. Chaube, S.P. "A Survey of Educational Problems and Experiments in India" Allahabad, Kitab Mahal, 1965
8. Sinha, A.K.P. & Singh, R.P. "Manual Adjustment Inventory for College Students" Agra, National Psychological Corporation, 1971
9. Garett, H.E. Garett, H.E.
10. "General Psychology" New Delhi, Ureshia Publishing House, 1968
11. ओड़, लक्ष्मीलाल के. "शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि" जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1973
12. पाण्डेय, रामशकल "शैक्षिक मनोविज्ञान" मेरठ, आर.लाल. बुक डिपो, 1990
13. राय, पारसनाथ "अनुसंधान परिचय" आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, 1993
14. ओड़, एल.के. "शैक्षिक प्रशासन" जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1973
15. भार्गव, महेश "आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षा एवं मापन" आगरा, हरप्रसाद भार्गव शैक्षिक प्रकाशन, 1993
16. भार्गव, ऊषा "किशोर मनोविज्ञान" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1993
17. गुप्ता, एम.एल. एवं शर्मा, डी.डी. "भारतीय समाज" साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 1997
18. कपिल, एच.के. "सांख्यिकी के मूल तत्व" आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, 1975
19. शर्मा, आर.ए. "मापन एवं मूल्यांकन" मेरठ, लॉयल बुक डिपो, 1993
20. शर्मा, आर.ए. "शिक्षा अनुसंधान" मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन, 2003
21. जायसवाल, डॉ. सीताराम "व्यक्तित्व का मनोविज्ञान" तृतीय संस्करण, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा, 1993
22. सुखिया, एस.पी., महरोत्रा एवं महरोत्रा "शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1990
23. श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. "सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान" साहित्य प्रकाशन, आगरा, 1999
24. पाठक, पी.डी. "भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2005
25. मंगल, एस.के. "स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलोजी एण्ड एजूकेशन" न्यू देहली, प्रिंटस हॉल ऑफ इण्डिया, 2002

पत्र–पत्रिकाएँ :–

1. एल्फ्रेड, एल्डर मानविकी शब्दकोष, मनोविज्ञान खण्ड राजकमल प्रकाश पृ.सं. 38
2. बुच, एम.बी. भारतीय आधुनिक शिक्षा, तृतीय अंक, जनवरी, 1989
3. भार्गव ऊषा किशोर मनोविज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ 1987
4. बुच, एम.बी. रिसर्च इन एजूकेशन, फोर्थ सर्वे, वोल्यूम 11, 1992
5. क्रो एल.डी. एण्ड क्रो ए. एजूकेशनल साइकोलोजी, न्यूयार्क अमेरिकन बुक कम्पनी, 1948
6. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्ट, जुलाई 1998, एन.सी.ई.आर.टी.
7. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्ट, वो. 4, नवम्बर 2001, जनवरी 2004, एन.सी.ई.आर.टी.
8. जनरल ऑफ ऐकेडमिक ऑफ अप्लाईड साइकोलोजी, जनवरी–जुलाई 1996
9. जनरल एजूकेशनल एब्सट्रेक्ट वो. 30 नं. 4, फरवरी 2005, एन.सी.ई.आर.टी.
10. शर्मा हरवंशलाल शिक्षा परिभाषा कोष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली, आमोरा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार
11. मैनुअल नेशनल साइकोलोजिकल कॉरपोरेशन, कचहरी गेट, आगरा
12. नई शिक्षा राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक पत्रिका, 30.12.2008, अंक 5
13. नई शिक्षा अंक 6, जनवरी 2007, किशोरावस्था एवं शिक्षा–विकास मोदी

एनसाईक्लोपीडिया –

1. चेस्टर डब्ल्यू. हेरिस – एनसाईक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशनल रिसर्चस, न्यूयार्क, दी मैकमिलन कम्पनी 1960
2. एनसाईक्लोपीडिया एण्ड साइकोलोजी
3. एनसाईक्लोपीडिया एण्ड एजूकेशन
4. इन्टरनेशनल एनसाईक्लोपीडिया ऑफ सोशल साईन्स, वो. 11–12
5. वाल्डविन, जैम्स एम. – एनसाईक्लोपीडिया ऑफ फिलासफी एण्ड साइकोलोजी, कोस्यो पब्लिकेशन्स, 1986
6. राजपूत, जे.एस. – एनसाईक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन एजूकेशन, वोल्यूम–II, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, अप्रेल–2004 है।